

और शुक्रिए के तौर पर उसने खुदा से आपके लिये दुरुद (सलवात) की दरखास्त की "अल्ला हुम्-म सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मद"

अब वह खास खुदा के ख्याल से ज़रा नीचे उतर कर रिसालत की सतह पर पहुँच चुका था जैसे दरबार से दुखसती के सिलसिले में खुदा के अर्श से पलट कर नबूवत की कुर्सी के पास आ गया था, तो उसने रसूल स० की तरफ़ रुख़ करके खुलूस के साथ आपकी वारगाह में सलाम पेश किया "अस्सलामु अलै-क ऐयुहन् नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुह।"

मालूम होता है कि जैसे अल्लाह के तेज के सदन में रसूल स० के सम्मान की कुर्सी है जिन्हें अदब के साथ सलाम करता हुआ बाहर आ रहा है। अब यहाँ से हटा और डयोढ़ी के पास आया, तो बन्दों और अपने बराबर वालों का झुरमुट नज़र आया तो कहने लगा "अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन। अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व ब-र-कातुह।"

आम तौर पर ये दोनो सलाम कहे जाते हैं मगर इनमें वाजिब एक ही है। मैं इनकी बनावट की वजह से ये समझता हूँ और कुछ हदीसों से भी ये बात साबित होती है कि पहला सलाम "अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन।" सारे मुसलमानों के लेहाज़ से है जो तसव्वुर की दुनिया में उस वक़्त उसके सामने होते हैं चाहे नमाज़े जमाअत हो या फ़रादा (अकेले की नमाज़)। इसलिये सलाम की हालत छिपी हुई हैसयत रखती है और दूसरा सलाम "अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बराकातोह।" जमाअत की नमाज़ के लिये है, इमाम की ज़बान से उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले लोगों के लिये है। इसलिये उसमें उन्हें बुलाने का अन्दाज़ है।

ये है इस्लाम की 'नमाज़' जो खुदा के भक्त होने को ज़ाहिर करने के साथ-साथ उसके बन्दों के साथ भी शिष्टाचार अच्छे तरीके और अच्छे मेल-जोल को सिखाने वाली है। कहीं मुसलमान इस खूबसूरत इबादत को सच्चाई की पहचान के साथ पूरा करें और इसको सिर्फ़ एक रस्मी बात समझ कर भुलावे, बेसुधी और रवा-रवी के कोहरे में न छिपा दें।



1/2 k j h-----1/2



egrjekrut h t gjkud oh d ult v d c j i j

कौन ला सकता है अहमद की क्यादत का जवाब दो जहाँ में है कहां उनकी क्यादत का जवाब

दुश्मनों के साथ भी हर वक़्त है हुस्ने सुलूक है यकीनन ग़ैर मुम्किन इस शराफ़त का जवाब

कौले ज़री पर फ़िदा होने लगे हैं जानो दिल कौन देगा इस फ़साहत इस बलागत का जवाब

आसमां तक सरनिगू है देखकर रिफ़ात तेरी ख़ल्क में मुम्किन नहीं तेरी जलालत का जवाब

संगे दिल क्या पत्थरों ने पढ़ लिया कल्मा तेरा बस में दुनिया के नहीं तेरी हुकूमत का जवाब

सारी दुनिया की निगाहें आप पर मरकूज़ हैं क्या कभी मुम्किन नहीं है ऐसी सूरत का जवाब

दे गये हैं दौलते कुरआनो इतरत मुस्तफ़ा^{स०} दोनों आलम में नहीं है ऐसी दौलत का जवाब

ऐ कनीज़े सादिके आले नबी यसरिब को चल खुल्द में रहना भी कब है इस सुकूनत का जवाब



uny fg h i

बरबरीयत होती है मेहरो वफ़ा के नाम पर छिन गयी तहज़ीब तक अदलो अता के नाम पर टुकड़ टुकड़े हो रहीं हैं मुत्तहिद नस्लें तमाम तफ़रिका मेराज पर है एकता के नाम पर

